सं अप्रो वि ० एफ उडी ० 45-87 32292. चूंकि हरियाणा के राज्य गल की राय है कि मैं ० (1) मैंनेजिंग हायरेक्टर, हरियाणा स्टेंट कोप ० डिवेल्पमैंन्ट बैंक लि०, एस० सी० ओ० 1016 तया 1034, सैक्टर 22, चण्डीगढ़, (2) मैंनेजर, दी पलवल प्राईमरी कोप्रेटिव लैंण्ड डिबेल्पमैंट बैंक लि०, पलवल, जिला फरीदाबाद, के श्रीमक श्री शील, भान पुत्र श्री सुरजन, गांव व डा० शेखपुरा (म न्यूरी), तह० ग्रसंद, जि० करनाल, तथा प्रबन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है,

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त ग्रधिनियम की धारा 7क के ग्रधीन गठित ग्रौद्योगिक ग्रिधिकरण हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा अमिकों के वीच या तो विवादग्रस्त मामला/मामले हैं ग्रथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेत् निर्दिष्ट करते हैं :---

क्या श्री शील भाम की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

संब्धी विवकुरू व 10-87/32300.---चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं व (1) मैनेजिंग डायरेक्टर, दी हरियाणा स्टेट सप्लाई एण्ड मार्किटिंग फेडरेशन लिव, चण्डीगढ़, (2) हैफेड राईस मिल्ज, कुरूक्षेत्र, के श्रमिक श्री स्रशोक कुमार, पुत्र श्री गिरधारी लाल, शंकर कलाथ हाऊम, रेलवे रोड़, शाहबाद (मारकण्टा), जिला कुरुक्षेत्र, तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ख्रौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947, की घारा 0 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हिरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी ऑग्नसूचना सं 0-3(44)84-3 श्रम, दिनांक 18 श्रप्रैल, 1984, द्वारा उक्त श्रिधसूचना की घारा 7 के श्रवीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उलसे सम्बन्धित नीचे लिखा मामना न्यायिनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला हैं या विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्री प्रशोक कुमार की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो वि | पानी | 64-87 | 3231 | --- चूं कि हरियाणा के राज्यशाल की राय है कि में (1) मैनेजिंग डायरेक्टर, हरियाणा टुरिंगम कारपोरेगन लिं , सैक्टर 17, चण्डीगढ़, (2) उप-मण्डल प्रभियन्ता (इलैक्ट्रीकल), हरियाणा टूरिंजम, करनाल, [(3) कार्यकारी श्रमियन्ता, टूरिंजम कारपोरेशन लिं , 310 | 7, पंचकुला, के श्रमिक श्री रमेश चन्द, पुत्र श्री चतर सिंह, गांव विरचुपुर, डाकखान बीजना, तहसील व जिला करनाल, तथा उस के प्रवन्ध हों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में होई ग्रीशोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रव, ग्रीद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं 3(44)84-3 श्रम, दिनांक 18 ग्रिपेल, 1984, द्वारा उक्त प्रिधिसूचना की घारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्वाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धितनीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुमंगन ग्रयवा सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्री रमेश चन्द की सेवाग्नों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० घ्रो० वि० ग्रम्बाला/39-86/32319.—चूंकि हरियाणा को राज्यपाल की राय है कि मै० (1) सचिव, हरियाणा राज्य बिजली वोर्ड, चण्डीगढ़, (2) कार्याकारी ग्रभियन्ता (ग्रो० पी० डिविजन), हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड, कैथल, के श्रमिक श्री चन्दन, पृत्र भान चन्द, गांव सोया, डा० कांगथली, तह० गुल्हा, जिला कुम्लेत, तथा उक्त प्रबन्धकों के सध्य इस में इस के बाद्र लिखित मामलें में कोई श्रौद्योगिक विवाद है; श्रीर चंकि हरियाण। के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

्रालिये, अब, आँदोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा संकारी अधिस्वाना स. 3(14)84-3 श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 गरा उस्त रिवाद प्रस्त रा उसते सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा संबंधित मामला है :--

क्या श्री चन्दन की सेवा समाप्ति/छंटनी न्यायोचित तथा ठोफ ह ? यह उहीं, तो वह किन राहन का हकदार है ?

सं. ह्रो. वि./अस्ता. 10-86/32326.—चुंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० (1) मलिव, हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, चण्डीगढ़, (2) कार्यकारी अभियस्ता (ब्रो.पी. डिविजन), हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, कैंथल, के श्रमिक श्री कृष्ण कृमार, पृत्न श्री अमर नाथ, गांव सीवन, निकट कैंथल, जिला कृष्किय तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ब्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायांनर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं:

इसलिए, अब, औद्योगिक दियाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपबारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हीरयाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिमृचना मं. 3(44)81-38म, दिनांक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उक्त अधिमृचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, अम्बाना, को विवादअस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्गय एवं पंचाट तीन मास में देने हेत् निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त सबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादअस्त मामला है या विवाद से सुनंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री कृष्ण कुमार की सेत्रा समाप्ति/छंटनी न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह फिस राहत का हकदार है?

सं. ग्रो. वि./ग्रम्बा/37-86/32333---चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राथ है कि मंच (1) मांचव, हरियाणा राज्य विजलों वोर्ड, चण्डीगढ़, (2) कार्यकारी ग्राभियन्ता (ग्रो.पी. डिविजन) हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, कैंथल, के श्रीमिक श्री प्रेम चन्द, पुत्र श्री वेद प्रकाश, गांव सीदन, निकट कैंथल, जिलाकुरुक्षेट नथा उसके प्रथन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

स्रोर चिक हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेन निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते है:

इसलिए, अत् श्रोद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10की उपवारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करने हुए हुन्यामा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिमुजना सं, 3(14) 81-3श्रम, दिनांक 1 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उस्त श्रीवसूबना की वारा 7 के अधीन गठिन श्रम न्यायत्त्व, अम्बाला, को विवादशस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हें नु निद्दित्व करने हैं जो कि उस्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादशस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित है:---

क्या श्री प्रेम चन्द की सेदा समाधित/छटनी न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हरूदार है ?

सं. श्रो. वि./श्रम्बा/41-86/32340.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं र (1) सचिव, हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, चण्डीगढ़. (2) कार्यकारी अभियन्ता (श्रो.पी.डिविजन), हरियाणा राज्य विजली वोर्ड, कैथल, के श्रीमक श्री राम जीवाया, पुत्र श्री रधुनन्दन, गांव सीवन, निशंट कैथल, जिला कुरुकेंच तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इस में इस के बाद लिखित मामले में दोई श्रोद्धीक विवाद है;

ग्रौर चींक हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायांनर्णय हेतु निदिएट हरना बांछतीय समझते है.

इसलिए, ग्रंब, ओद्योगिक विदाद अधिनियम, 1917, की धारा 10 की उप गरा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रतीग करते हुए ही याणा के राज्यपाल इस के द्वारा संग्कारी अधिन्त्वत में 3(4) 84-3श्रम, दिनांक 18 श्रप्रेल, 1984, द्वारा उक्त अधिन्युवना की श्रारा 7 के श्रधीन गाठत श्रम न्यायालय, ग्रम्याना, को विवादग्रस्त उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन में देने हेतु निर्दिष्ट करते है जो कि उन्त प्रयन्धकों तथा श्रमिक के श्रीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुर्भात अथवा जन्यन्धित भागता है।

क्या श्री राम जीवाया की सेवा समाप्ति/छंटनी न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं. तो वह किस राहत का हकदार है 🦩